अपनी बात पर अडिग रहे। लगभग छह दशकों का अनुभव जयप्रकाश जी के विचार की महत्ता अनुभव कराता है।

पार्टी आधारित डेमोक्रेसी के कारण नेतागण देश को सुशासन देने के स्थान पर सत्ता-संघर्ष में ही उलझे हुए हैं। सत्ता पाने के लिए विधि-निषेध की उन्हें परवाह नहीं है। 'आयाराम-गयाराम' का मार्ग अपनाने में उन्हें संकोच नहीं है। क्षेत्रीयता, जातियता व सांप्रदायिकता के गठजोड़ से सिद्धांतहीन सरकारें बनाई जा रही हैं। राजनीति में अखिल भारतीय जीवन-दृष्टि की अवहेलना हो रही है। केवल सत्ता पाने का लक्ष्य ही सर्वोपरि बना है।

1969 में सत्ता में बने रहने के लिए प्रधानमंत्री इंदिरा जी ने अपनी ही पार्टी कांग्रेस को खण्डित किया था। जब सत्ता पाना ही नेताओं तथा पार्टियों का लक्ष्य बना है तो सभी पार्टियां हर स्तर पर गुटबाजी की शिकार बनी है। राजनीति आदर्श-विहीन बनी है। केन्द्रीय तथा प्रादेशिक सरकारें अस्थिर होने लगी हैं। भ्रष्टाचार अनियंत्रित हो गया है। अराजकता देशव्यापी बनी है। शासन से जनता का भरोसा उठ गया है।

स्वतंत्रता के 58 साल में किसी भी पार्टी की सरकार ने छह लाख गांवों में रहने वाली लगभग तीन-चौथाई आबादी की ओर देखा तक नहीं है। यह है हमारा प्रचलित लोकतंत्र। बेकारी और गरीबी की यातनाओं से त्रस्त होकर देश के अनेक भागों में लोग आत्महत्याएं कर रहे हैं। किन्तु देश के व्यक्तिवादी व सत्ताप्रेमी नेता अपनी सत्ता कायम रखने या पाने के लिए करोड़ों रूपयों के वारे-न्यारे कर रहे हैं। उन्हें देश और समाज की दुर्दशा की तनिक भी परवाह नहीं है। यह है पार्टी डेमोक्रेसी की दिशा और दशा।

गुजरात में श्री चिमनभाई पटेल की सरकार के भ्रष्टाचारी व अधिनायकवादी तौर-तरीकों से तंग आकर क्रुद्ध युवाओं ने सरकार के खिलाफ 'नवनिर्माण' आंदोलन प्रारंभ किया था। प्रांत भर के युवजनों ने एकजुट होकर अपने आंदोलन को दुर्दमनीय बनाया था। परिणामस्वरूप, चिमनभाई पटेल की सरकार का टिकना असंभव हुआ था।

गुजरात में युवा-शक्ति के स्वप्रेरित उभार से जयप्रकाश जी का युवा-शक्ति पर विश्वास द्विगुणित हुआ। उन्होंने ''समग्र-क्रांति'' द्वारा सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन में आमूलचूल परिवर्तन प्रारंभ करने के लिए यही समय उपयुक्त समझा।

1974 में बिहार के भ्रष्ट शासन के खिलाफ उन्होंने अपना स्वास्थ्य खराब होते हुए भी ''समग्र-क्रांति'' अभियान की शुरूआत की।

जयप्रकाश जी की किडनी काम करने से इंकार कर चुकी थी। हर हफ्ते उन्हें डायलिसिस करवाना अनिवार्य हुआ था। अधिक आयु के कारण कमजोरी भी बढ़ रही थी। फिर भी देश की गंभीर हालत ने उन्हें बेचैन बनाया था। वे अपनी बीमारी व कमजोरी की परवाह किए बिना गांव-गांव का दौरा करने लगे। युवक-युवतियां तपस्वी जयप्रकाश जी की व्याकुलता और हिम्मत देखकर ''समग्र-क्रांति'' में जी-जान से जुटने लगे। बिहार के विद्यालयों से युवक-युवतियां टोलियां बनाकर गांव-गांव में ''समग्र-क्रांति'' के जुलूस

निकालने लगे थे। विद्यार्थी परिषद् के युवकों ने भी इसमें योगदान दिया। बिहार की सम्पूर्ण युवा-शक्ति ''समग्र-क्रांति'' अभियान में उमड़ पड़ी।

जयप्रकाश जी ने 14 नवम्बर, 1974 को पटना में विधान सभा भवन पर प्रदर्शन की घोषणा की। सरकार ने जगह-जगह बैरिकेड खड़े कर प्रदर्शनकारी विधान सभा भवन न पहुंचें, इसका जोरदार बंदोबस्त किया था। किन्तु उभरती युवा-शक्ति के जोश का तफूान इतना प्रबल था कि सारे बैरिकेड बेकार सिद्ध हुए।

हजारों की संख्या में युवक-युवतियां जयप्रकाश जी के नेतृत्व में विधान सभा भवन की ओर बढ़ रहे थे। इनमें किसी भी राजनीतिक पार्टी या नेता का योगदान नहीं था। पुलिस के अश्रुगैस और लाठी चार्ज के बावजूद जुलूस तितर-बितर न होकर आगे ही बढ़ता गया। युवक-युवतियों के सर फटकर लहू-लुहान होते देख जयप्रकाश जी स्वयं आगे बढ़े। उन पर भी लाठी प्रहार करने में पुलिस ने संकोच नहीं किया। थके-मांदे जयप्रकाश जी घायल अवश्य हुए, किन्तु प्रभु कृपा से उनके प्राण बच गए।

जवानों के इस विशाल हुजूम में से किसी एक ने भी पुलिस पर पथराव नहीं किया। तोड़-फोड़ की एक भी घटना नहीं घटी। यह थी तपस्वी जयप्रकाश जी के व्यक्तित्व की महिमा।

पटना में जयप्रकाश जी पर हुए लाठी-प्रहार की निंदा देश भर में प्रतिध्वनित हुई। जयप्रकाश जी के साहसी साथी स्व. रामनाथ गोयनका जी हर कदम पर ''समग्र-क्रांति'' का साथ दे रहे थे। ''समग्र-क्रांति'' के वे आधारस्तंभ ही थे। उनके द्वारा प्रस्थापित 'इंडियन एक्सप्रेस' के देशव्यापी समूह ने ''समग्र-क्रांति'' की लहर देश भर में फैलाई। देश भर की युवा-शक्ति ने ''समग्र-क्रांति'' का आह्वान स्वीकार किया था। श्रीमान् चंद्रशेखर ने जयप्रकाश जी के अभियान की दुर्दमनीयता का अनुभव किया था। उन्होंने जयप्रकाश जी से टकराव न लेने की प्रधानमंत्री को सलाह दी थी। लेकिन इंदिरा जी किसी की भी परवाह करने के मूड में नहीं थी।

दिनांक 12 जून, 1975 को इलाहाबाद हाईकोर्ट ने इंदिरा जी की लोक सभा सदस्यता निरस्त की थी। किन्तु इंदिरा जी गैर-कानूनी ढंग से गद्दी पर बनी रहने पर उतारू थी।

इंदिरा गांधी ने जयप्रकाश जी के नेतृत्व में जन सैलाब की प्रबलता देख 25 जून, 1975 को आधी रात में देश पर 'इमरजेन्सी' लादी। देश के विरोधी दलों के (कम्युनिस्टों को छोड़कर) सभी नेताओं, कार्यकर्ताओं और युवाओं को रातों रात जेलों में ठूंस दिया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबंध लगाया। मीडिया के मुंह पर ताला ठोंक दिया। अपने विरूद्ध उठने वाली आवाज को बंद कर दिया। किन्तु स्व. रामनाथ जी गोयनका का इंडियन एक्सप्रेस समूह अपनी जिद पर अड़ा रहा।

इंदिरा जी की तानाशाही के सामने संपूर्ण देश डेढ़ साल चुपचाप दिखाई पड़ा। इंदिरा जी ने समझा कि अब उनके विरूद्ध खड़ा होने की कोई हिमाकत नहीं कर सकता। इसी मुगालते में इंदिरा जी ने 1977 के प्रारंभ में आम चुनाव करने की घोषणा कर दी।